शिक्षाविदों का प्रवेश

सरिता राय

बंगलोर के सरजापुर रोड पर विप्रो के ऊंचे, आलीशान स्टील एवं शीशे से बने कार्यालयों तथा उसी कम्पनी के चेयरमैन अजीम प्रेम जी के नितान्त निजी, आम लोगों की ताक-झांक करती निगाहों से दूर, बंगले के बीच दबी हुई एक साधारण-सी दिखती दो मंजिली इमारत नजर आती है। पिछवाड़े घने जंगलों और गिरती पत्तियों से घिरी, यह छोटी-सी इमारत एक स्वप्निल-सा दृश्य प्रस्तुत करती है। अनावृत ईंटों, टाइल्स और हरे-नीले कांच से बनी है यह इमारत। प्रवेश द्वार पर एक छोटा-सा सूचनापट्ट हैअजीम प्रेमजी फाउंडेशन।

अजीम प्रेमजी विश्वविद्यालय का यह कार्यकारी मुख्यालय है। भारत का अपने ढंग का पहला विश्वविद्यालय भव्य, किसी लाभ के लिए न होकर, भारत की शिक्षा प्रणाली में क्रान्तिकारी परिवर्तन की महती आकांक्षा से प्रेरित। प्रेम जी की सृजनात्मक ललक के अनुरूप, भारत के नीरस, श्लथ शिक्षा जगत में उथल-पुथल मचाने एवं 'असली भारत' पर गुणात्मक असर डाल सकने की क्षमता रखने वाली योजनाएं इस इमारत के अन्दर आकार लेने को मचल रही हैं।

भारत में शिक्षाविदों का घोर अभाव है। शिक्षक नहीं, शिक्षाविदजो पाठ्यक्रम तैयार कर सकें, शिक्षकों को शिक्षित कर सकें, जो योग्यता-निर्धारण, परीक्षा, तकनीक एवं नीति-निर्धारण से जुड़ी चुनौतियों को समझते हैं। जिस तरह मैनेजमेन्ट, इन्जीनियरिंग एवं मेडिकल स्कूलों में उस क्षेत्र के विशेषज्ञ तैयार होते हैं, भारत में ऐसा कोई विश्वविद्यालय नहीं है जहां शिक्षाविद तैयार होते हों। प्रेम जी विश्वविद्यालय उस रिक्तता को भरता है।

संस्थान के को- सीईओ अनुराग बेहर का कहना है"हमने समझा कि कक्षा के अन्दर शिक्षक मुख्य परिवर्तनकारी घटक है। भारत की शिक्षा प्रणाली में आमूल-चूल परिवर्तन करने के लिए हमें ऐसे विश्व विद्यालय की आवश्यकता है जो शिक्षकों को शिक्षित कर सके।"

यह इतना विवेचनात्मक क्यों है? इसलिए कि ऐसी संभावना व्यक्त की जा रही है कि अगले कुछ सालों में विश्व के हर चार नए वेतनभोगी व्यक्तियों में एक भारतीय होगा। विश्व अर्थवेत्ता भारत की युवा जनसंख्या एवं उनकी सतत गतिमान विशाल श्रम शक्ति के प्रस्तुतीकरण से अपने को रोक नहीं पा रहे। यह तो हुई संख्यात्मक शक्ति की बात, किन्तु गुणवत्ता का क्या होगा?

स्वतंत्रता के बाद भारत में 1,30,000 स्कूल थे। आज इस देश में 140 लाख स्कूल हैं और इक्कीस करोड़ विद्यार्थी। 70 लाख लोग इस व्यवस्था से जुड़े हुए हैं। किन्तु इस वृहद विकास का ही दूसरा अपेक्षित पहलू हैबहुत सारे स्कूल और गुणवत्ता की दृष्टि से बहुत ही मामूली शिक्षण। परिणाम? नौकरी के लिए अयोग्य लोगों का नियमित भारी उत्पादन। इस दिशा में किया गया अध्ययन दर्शाता है कि बहुत सारे चौथी कक्षा के विद्यार्थी न तो पढ़ना जानते हैं, न लिखना। अपनी चमक खो चुके स्कूली शिक्षण को भारत में एक चक्रवाती तूफान की आवश्यकता है, जो उसे झिंझोड़ कर रख दे।

भारत के सबसे अमीर, अरबपति, तकनीकी विज्ञान से जुड़े उद्योगपति अजीम प्रेम जी प्रवेश करते हैं। और कौन था भी जो ऐसी योजना में हाथ डालता जिसे कारपोरेट युद्धनीतिज्ञ क्षणांश में आर्थिक दृष्टिकोण से पूर्णतः अव्यावहारिक मान खारिज कर चुके हों? बल्कि यह विडम्बना ही कही जाएगी कि भारत का पहला शिक्षण से जुड़ा विश्वविद्यालय स्टैनफोर्ड विश्वविद्यालय के विद्युत अभियांत्रिकी विभाग की पढ़ाई बीच में ही छोड़ देने वाले व्यक्ति के द्वारा स्थापित हो रहा है जिसकी तुलना अक्सर ही एक अन्य, प्रसिद्ध, हार्वर्ड विश्वविद्यालय के अधूरे स्नातक, माइक्रोसाफ्ट के बिल गेट्स से की जाती है।

कुछ एक दशक पहले, जब भारतीय भी भारतीय तकनीकी सामन्तों के निरन्तर ऊपर चढ़ते स्टाक मार्केट को गंदला कर रहे थे, प्रेम जी विप्रो के अपने विश्वासपात्र लेफ्टिनेंट को यह बताने के लिए एकजुट कर रहे थे कि व्यापार का कार्य मात्र पैसे कमाने के लिए नहीं होता। टीम में प्रचंड वाद-विवाद शुरू हो गया कि क्या सम्पत्ति समाज सुधार की शुरुआत का माध्यम हो सकती है!

ए एच पीजैसा कि उनके सहकर्मी उन्हें सम्बोधित करते हैंको कोई सन्देह नहीं था, "मैं इस तरह किसी एक व्यक्ति को देने के बजाय सौ लोगों को दूंगा।" अपनी बिन्दुओं को जोड़ने वाली चिर-परिचित शैली में उन्होंने निष्कर्ष दिया कि पिछड़े वर्ग के लिए बेहतर शिक्षा एक न्यायोचित, मानवोचित एवं समानता मूलक समाज को आगे बढ़ाएगी। अंततः यही विश्वविद्यालय का उल्लिखित लक्ष्य होगा। अजीम प्रेम जी विश्वविद्यालय 100 एकड़ जमीन पर जब चार सालों में बन कर तैयार होगा तो आरम्भ में 4,500 छात्रों को शिक्षित करेगा। भविष्य में और

* इंडियन एक्सप्रेस, 9 जनवरी, 2011, में छपे समाचार का अनुवाद। अनुवादिका डॉ. इला प्रसाद

अधिक विस्तार की सम्भावनाएं बनी रहेंगी। विप्रो के दो पूर्व कार्यकारी प्रशासक दिलीप रंजेकर और अनुराग बेहर इस न्यास के को.सी.ई.ओ. होंगे। विश्वविद्यालय का प्रशासन न्यास के हाथ में होगा। 200 छात्रों का पहला बैच इसी वर्ष मार्च में नामांकन लेगा और जून तक एक अस्थायी भवन में कक्षाएं आरम्भ हो जाएंगी।

यह सब रातोंरात नहीं हुआ। नौ साल पहले इस न्यास ने राज्य सरकार एवं सहयोगी एन. जी. ओ. (गैर सरकारी संगठन) के प्रोजेक्ट में सहयोग के साथ काम शुरू किया। भारत के नौ राज्यों के बीस हजार स्कूलों में पढ़ रहे 25 लाख बच्चों तक इसका कार्य फैला हुआ था। इतने बड़े स्तर पर कार्य करने के बावजूद, न्यास का कार्य अधिकतर, रेडार के अन्दर रहा। रंजेकर जिन्होंने पहले विप्रो के मानव-संसाधन विभाग की अध्यक्षता की थीस्मरण करते हैं "ए.एच.पी. आरम्भ से ही बिल्कुल स्पष्ट थे कि हम इस काम से श्रेय लेने या प्रचार के लिए नहीं जुड़े हैं। यदि कोई परिवर्तन वास्तव में होता है तभी हमें संतुष्टि होगी।"

कर्नाटक में न्यास का प्रयास परीक्षा प्रणाली में सुधार लाने का थारटे-रटाए जवाबों वाली परीक्षा प्रणाली से हटकर योग्यता की परीक्षा हो सके, ऐसी परीक्षा प्रणाली का 6,464 स्कूलों में परीक्षण राजस्थान में राष्ट्रीय पाठ्यक्रम के स्थानीयकरण के लिए 78,000 स्कूलों के लिए कार्य पुस्तिका बनाने का कार्य इसके जिम्मे रहा। उत्तराखण्ड में 1,600 स्कूलों में शिक्षक-प्रशिक्षण का कार्यक्रम चला। एक सोची-समझी योजना के तहत, विमर्शपूर्वक बड़ी योजनाओं को हाथ में लेकर और यह प्रदर्शित कर कि मौजूदा तंत्र के अन्दर भी समस्याओं के परिवर्तनकारी समाधानों के प्रयास सम्भव हैं, न्यास ने खुद को एन.जी.ओ. के ढांचे से अलग कर लिया।

इन योजनाओं पर कई वर्षों तक कार्य करते रहने के पश्चात् लक्ष्य निश्चित स्वरूप धारण करने लगे। फलतः जमशेदजी टाटा के भारतीय विज्ञान संस्थान, बंगलौर की स्थापना के सौ वर्ष के बाद शिक्षकों के शिक्षण का विश्वविद्यालय सामने आया। कर्नाटक सरकार ने दो वर्ष पहले इसकी स्थापना को स्वीकृति दी है।

यह कई कारण से असामान्य था। विश्वविद्यालय बनाने की अनुमति के अतिरिक्त न्यास ने सरकार से और कुछ नहीं लियान जमीन, न कोई अनुदान, न ही किसी अन्य प्रकार की कोई सहायता या दान। बेहर कहते हैं"भारत में निजी पूंजी पिछले कई वर्षों, बल्कि शायद पिछले सौ सालों में कभी भी विश्वविद्यालय बनाने जैसे सामाजिक कार्यों में नहीं लगाई गई।"

दो अरब के शेयर इस परियोजना के लिए हस्तांतरित करने के पश्चात् प्रेमजी ने पुनः दोहराया, "अच्छी शिक्षा एक न्यायसंगत, मानवतामूलक, समानतामूलक एवं व्यक्ति का पोषण करने में समर्थ समाज की स्थापना के लिए निर्णायक तत्त्व है। हमारे सारे प्रयास, विश्वविद्यालय भी, जो हम बना रहे हैं, समाज के पिछड़े एवं दलित वर्ग के लिए हैं।" उन्होंने इस विषय पर उसके बाद से कोई बात नहीं की है।

वर्तमान में, को.सी.ई.ओ. रंजेकर एवं बेहर विश्वविद्यालय के संचालन का संयुक्त दायित्व संभालते हैं। पूना के निवासी, वास्तुशिल्पी क्रिस्टफर बेंनिगर सरजापुर रोड की सौ एकड़ जमीन पर बनने वाले विश्वविद्यालय भवन का नक्शा तैयार कर रहे हैं जो विप्रो के मुख्यालय से 15 किलोमीटर की दूरी पर है। चार महीने बाद शिलान्यास होना है।

पांच वर्ष में विश्वविद्यालय में 500 लोग नौकरी पर होंगे। तब यह विश्व का सबसे बड़ा लाभ निरपेक्ष संस्थान हो जाएगा। यह कार्यक्रम देगा एवं शिक्षा तथा परीक्षा प्रणाली में सुधार से सम्बन्धित शोध कराएगा। इसके साथ ही यह शिक्षा एवं विकास के क्षेत्र में पेशेवर लोगों को प्रशिक्षण देगा। सतत शिक्षा एवं दूरस्थ शिक्षा के लिए उच्च गुणवता की शिक्षा उपलब्ध कराएगा।

आप सोचेंगे, ये सब बड़ी-बड़ी बातें हैं केवल! किन्तु यदि आप ध्यान में रखें कि इस विश्वविद्यालय के पीछे कौन है एवं उसकी कम्पनी की वंशावली क्या है तो ये इतनी बड़ी बातें नहीं लगतीं। बहुत सारे लोग यह भूल जाते हैं कि प्रेमजी ने अपने पारिवारिक व्यवसाय, खाद्य तेल का व्यापार, को देश की शीर्षस्थ तकनीकी कम्पनियों में बदल डाला।

आगामी कुछ वर्षों में यह विश्वविद्यालय पाठ्यक्रमों का एक विशाल फलक प्रस्तुत करेगाशैक्षिक प्रबन्धन में स्नातकोत्तर, नेतृत्व एवं प्रशासन में शोध की डिग्री, पाठ्यक्रम अभिकल्पना में परा-शोध कार्यक्रम, विज्ञान, गणित, समाज-विज्ञान एवं भाषा के शिक्षा-शास्त्र में विशेषज्ञता, शिक्षण-तकनीक में विशेषज्ञता, शिक्षकप्रशिक्षण एवं योग्यता निर्धारण प्रणाली में विशेषज्ञता। जब यह विश्वविद्यालय बन जाएगा तो प्रतिवर्ष यहां काफी बड़ी संख्या में, दो हजार, शिक्षाविदों का संवर्ग तैयार होगा।

इसके समानान्तर, यह विश्वविद्यालय सात राज्यों में फील्ड प्रोग्राम (क्षेत्र-योजना) चलाएगा। पचास आदर्श विद्यालयों में छात्रा व्यावहारिक प्रशिक्षण प्राप्त करेंगे। दूरवर्ती इलाकोंजैसे राजस्थान में टोंक और उत्तराखंड में उत्तरकाशीमें उसका सर्वोत्तम प्रदर्शन करेंगे एवं सरकार द्वारा चलाए जा रहे हजारों स्कूलों से सहयोग करेंगे।

बड़े पैमाने पर इन योजनाओं को क्रियान्वित करने में अभी कठिनाइयां आ रही हैं। भारत जैसे देश में, जहां शिक्षण-प्रशिक्षण विशेषज्ञों का अकाल है, विश्वविद्यालय को अध्यापन के पेशे से जुड़े लोगों, विदेशों से लौटे भारतीयों, यहां तक कि विदेशी शिक्षण विशेषज्ञों को काम में लगाना पड़ रहा है। किन्तु, न्यूयार्क के कोलम्बिया विश्वविद्यालय जैसी जगहों पर उत्तेजना स्पष्ट तौर पर महसूस की जा सकती है जहां इस विश्वविद्यालय की मंजाई चल रही है, जब बेहर एवं दूसरे एक्सीक्यूटिव ऐसे विश्वविद्यालय की चर्चा करते हैं "जो सामाजिक कारणों से बनेगा एवं 'नए भारत' के निर्माण में सहयोग देगा।"

शिक्षा में निवेश : परिवर्तन एवं प्रभाव

आधारनामी विश्वविद्यालय को आरम्भ करने एवं चलाने के लिए अजीम प्रेमजी न्यास ने अल्पभाषी प्रेमजी से अभी हाल ही में नब्बे अरब रुपयों का दान प्राप्त किया। प्रेमजी ने इस विषय पर बहुत कम कहा है किन्तु उनका अत्यधिक उदारता से दिया गया यह अनुदान उन्हें प्रथम खरबपति भारतीय बना देता है जो शोषित जन के लिए भारतीय शिक्षा में सुधार के लिए इतना प्रतिबद्ध हो। किन्तु, अपनी सम्पत्ति का 8.7 प्रतिशत या 213 करोड़ के विप्रो शेयर्स दान करने के पीछे भी उनके निंदकों को नए स्टाक मार्केट नियमों के अनुपालन की चाल नजर आती है। नए नियमों के अनुसार संस्थापक उद्योगपति को अपना स्टाक 75 प्रतिशत या उससे कम रखना जरूरी है। जहां स्टाक अब न्यास की स्थायी-निधि हैं, इस सम्बन्ध में मतदान का अधिकार प्रेमजी के पास है।

भारतीय संस्कृति में यह बात गहरे समाई हुई है कि अपनी सारी सम्पत्ति अपनी अगली पीढ़ी के लिए छोड़ जाई जाय, न कि उसे किसी सामाजिक कार्य में लगाया जाय। किन्तु यह सोच अब बदल रही है और नई पीढ़ी 'वर्तमान' पर होने वाले तात्कालिक प्रभाव को लेकर सोचती है। ऐसा मानना है वेंकी राघवन काजो 'अमेरिकी-भारत न्यास' नामक दान संस्था के पूर्व मुख्य लोकोपकारक प्रशासनिक अधिकारी रहे हैं एवं पिछले दो दशकों तक अन्तरिक्ष-विभाग से जुड़े रहने के पश्चात अब सेवानिवृत अधिकारी हैं।

प्रेमजी का यह उदार-दान अद्वितीय है, इसमें कोई शक नहीं किन्तु सर्वप्रथम नहीं है। कुछ अन्य लोग, जैसे एच सी एल के शिव नादेर एवं भारती के सुनील मित्तल इस क्षेत्र में उनसे पहले आ चुके हैं। शिव नादेर न्यास के वरिष्ठ सलाहकार सुनील अधिकारी कहते हैं कि पिछली पीढ़ी के कई उद्योगपति अपनी सफलता का श्रेय अपनी ऊंची शिक्षा को देते हैं। "शिक्षा के क्षेत्र में निवेश कर वे इसकी परिवर्तनमूलक शक्ति पर अधिकार कर रहे हैं, बहुत कुछ उस शक्ति की तरह जिसने उन्हें उनके आरम्भिक दिनों में आगे बढ़ाया।"

भारत के सुनील मित्तल ने 200 स्कूलों की एक नई व्यवस्था स्थापित की है जो ग्रामीण क्षेत्रों के निर्धन बच्चों को उच्च स्तर की शिक्षा निःशुल्क उपलब्ध कराती है। मित्तल का कहना है कि वह बच्चों की सहायता करना चाहते हैं कि वे 'पीढ़ी-दर-पीढ़ी' गरीबी के चक्र से बाहर आ सकें।

एच सी एल के नादेर ने पिछले वर्ष 13 करोड़ डॉलर शिक्षा के लिए देने का वचन दिया। वेदान्त न्यास के अनिल अग्रवाल पुरी में 6,000 एकड़ भूमि में फैले विश्वविद्यालय की योजना बना रहे हैं। अन्य कई, जैसे कि अंबानी 'ऊंची शिक्षा' के स्कूल चलाते हैं। किन्तु प्रेमजी जिस बड़े पैमाने पर आम जनता के लिए 'गुणात्मक प्रभाव' की आशा कर रहे हैं, वैसा प्रयास अब तक किसी ने नहीं किया।

कुछ समय पहले तक भारतीय अरबपतियों के लोकहित में किए गए कार्यों के आंकड़े निराशाजनक रहे हैं।

यह बिल्कुल ही समझ में न आने वाली बात है कि भारतीय धनाढ्य विदेशी विश्वविद्यालयों को क्यों उदारतापूर्वक अनुदान दे रहे हैं। रतन टाटा ने हार्वर्ड बिजनेस स्कूळ को पांच करोड़ का अनुदान दिया। आनंद महिन्द्रा ने एक करोड़ उसी विश्वविद्यालय के मानव संसाधन विद्यालय को दिया। प्रेमजी के समकक्ष, नारायणमूर्ति एवं नंदन निलेकानी ने भी बड़े-बड़े अनुदान अमेरिका के आइ वी लीग स्कूल को दिए हैं।

भारत के धनाढ्य वर्ग के बीच शिक्षा एक सामाजिक कार्य के रूप में लोकप्रिय होने लगी है। राघवेन्द्र कहते हैं कि वे शिक्षा को शक्ति एवं स्वतंत्रता के रूप में देखते हैं जिसमें बहुत बड़ी भावनात्मक अपील भी है। अब, यदि भारत के उद्योगपति अपने समृद्ध अनुदान से शिक्षा के क्षेत्र में भी उसी तरह सफल होने लगे जिस तरह वे अपने व्यापार के क्षेत्र में हैं तो 'वास्तविक भारत' एवं 'नया भारत' दो भिन्न मुहावरे न होकर समानार्थी हो जाएंगे।